कोई हर्जा नहीं है बच्चे। 80 जन्म कौन–से, 85, 84, साढ़े 84, सवा 84, ऐसे–2 कहते रहते हैं। 84 तो गाया जाता है ना बच्चे। 84 तो हैं ही। बाकी है ये तुम्हारा जन्म, तो इसको कहा ही जाता है–गुप्त। अंग्रेज़ी में कहा जाता है–इनकॉगनिटो। यूँ तो सभी बच्चे जानते हैं कि वो बाबा है हमारा। तो देहअभिमान होने के कारण वो इतना नहीं समझते हैं...। ...मीठी प्वाइंट्स। कहते हैं सभी आपस में, भई ब्रदर्स हैं सभी, ब्रदरहुड। ऐसे नहीं कहते कोई– फादरहुड। ना। फादरहुड होता तो फादर को कोई याद नहीं करता। ब्रदरहुड– हम सब भाई–2 हैं आत्माएँ। इसलिए भाई–2 बाप को याद करते हैं। तो आत्मा भी गुप्त है ना बच्चे। तो ये तुम्हारा जन्म भी गुप्त है। बाप भी गुप्त है। पढ़ाने आया है, गुप्त है। किसको ये मालूम ही नहीं है कि निराकार बाप आ करके पढ़ाते हैं। उसमें, गीता में जो भूल कर दी है– श्रीकृष्ण भगवानुवाच्य और भगवान कहते हैं कि मैं तुझे राजयोग सिखलाता हूँ और फिर, अभी यज्ञ की बात हुई, फिर कहते हैं कि इस यज्ञ से (...)। अभी वो मुख से फिर कहते हैं रुद्र ज्ञान यज्ञ से ये महाभारत की विनाश ज्वाला ऐसे निकला है। अभी रुद्र तो कृष्ण को कहा ही नहीं जाता है। अभी ऐसे तो नहीं, भगवान रुद्र कहें और फिर कहें शिव के लिए कि उसके इस यज्ञ से (...) और यज्ञ में चाहिए ब्राह्मण। कृष्ण तो हो ही नहीं सकता है ना बच्चे। तो गीता में तुम बच्चों को मुश्किलात होती है ना समझाने के लिए, तो उनको समझाओ कि तुम कहते हो– भगवानुवाच्य, फिर वो कहते हैं इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से प्रज्ज्वलित। अभी वो तो फिर बाप का नाम ले लेते हैं। निराकार रुद्र ज्ञान ... से ये विनाश ज्वाला महाभारत की प्रज्ज्वलित हुई है, जिसमें ये सभी अनेक धर्म विनाश हो जाएँगे। ये जो धर्म मैं स्थापन कर रहा हूँ, वो एक ही फिर होगा सतयुग में। तो ये तो बच्चों को बिल्कुल सहज है किसको भी समझाने। एक बात तुमने अच्छी तरह से समझाई और बहुत जब हो जाएगा तब ये थरथरा मचेगा; क्योंकि सारी दुनिया में है–कृष्ण भगवानुवाच्य। हाँ, अब तुमको मालूम पड़ता है कि भगवानुवाच्य। अभी भगवान तो यहाँ है ना–इनकॉगनिटो। तो तुम्हारा भी ये जन्म गुप्त। बाप कहते हैं– मैं भी गुप्त हूँ इस शरीर में और फिर कहता भी हूँ कि यहाँ कोई भी धर्म वाला हो–सिक्ख हो, मुसलमान हो, पारसी हो; क्योंकि ये बाप आत्माओं को पढ़ाते हैं। बाप कोई शरीर को नहीं देखते हैं; क्योंकि बाप तो सबका है ना। ... मुसलमान हो, पारसी हो, कोई भी हो। तभी कहते हैं कि बच्चों, देह के जो भी तुम्हारे सभी धर्म हैं, मैं फलाना हूँ, टीरा हूँ, ये हूँ, ये सभी देह के धर्म। आत्मा का स्वधर्म है ही शांत। रहने वाली शांतिधाम में। फिर देह के साथ कनेक्शन– मामा, काका, बाबा, चाचा, ये धर्म वगैरह सभी। तो बोलता है– सिर्फ देही के धर्म में रहो। देह के जो धर्म हैं– इत्यादि–2 मामा, काका, बाबा फलाना, पारसी फलाना, ये सभी छोड़ दो। आत्मा को तो पारसी कोई नहीं कहेंगे, आत्मा को तो कोई गुजराती नहीं कहेंगे, आत्मा तो कोई सिक्ख तो नहीं कहेंगे किसको। तो बाप बैठ करके बच्चों को समझाते हैं कि बच्चे, तुम अपन को आत्मा समझो। बाकी देह के जो सभी धर्म हैं, उनको सब त्याग दो इस समय में। क्यों? कि हम तुमको पढ़ाते हैं, पवित्र बनाते हैं, शिक्षा देते हैं– माम एकम् (...)। तो सभी आत्माओं को कहते हैं ना बच्ची। इसमें देह का धर्म, बोलता है– छोड़ दो ये सभी। भले कोई भी हो, किस भी धर्म का हो। कि बाप तो बेहद का है ना। वो तो हद के धर्म हैं ना। अभी देखो जैसे ये सिक्ख आया। वो यहाँ तो इनको ना, सिक्ख लोग बोलेंगे– तुम कहाँ दूसरे धर्म में जाते हो, ब्रह्माकुमारियों के पास क्यों जाते हो? अरे भई, ब्रह्माकुमारियों का धर्म क्या है? ब्रह्माकुमारियों को धर्म तो कोई है नहीं। धर्म है क्या ब्रह्माकुमा... ब्रह्माकुमारियाँ

माना ब्राह्मण धर्म में हैं। अभी उन लोगों को ये नहीं मालूम है, कोई ब्राह्मण धर्म में जाते हैं। ये पराये धर्म में क्यों जाते हो? इनके पास क्यों जाते हो? ये तो दूसरा धर्म है। समझ कुछ भी नहीं है। नहीं तो ये है तुम ब्राह्मण धर्म; क्योंकि प्रजापिता ब्रह्मा के जो आ करके बालक बनते हैं वो तो ब्राह्मण ही ठहरेंगे ना। और कृष्ण तो यज्ञ नहीं रचते हैं। ये तो यज्ञ– रुद्र ज्ञान यज्ञ और बाप फिर कहते हैं कि क्यों होती है विनाश ज्वाला; क्योंकि तुम ये पुरानी दुनिया को तो खतम कर रहे हो ना। ये कोई सभी लड़ाई में थोड़े ही मरते हैं। ना–2, ये तो नैचुरल कैलेमिटीज़ मुख्य है बच्ची उस समय में। बॉम्ब्स कहाँ फेंकेंगे इतने सभी! नहीं। ये सभी अर्थक्वेक्स होंगी, ये नैचुरल कैलेमिटीज़ होंगी, तो बाप बैठकर समझाते हैं और यहाँ कोई भी धर्म वाला, देखो पारसी भी है, मुसलमान भी है। पूने के तरफ में मुसलमान हैं। मुसलमान ही अपने क्लास चलाते हैं। कोई ब्राह्मणी जाती है, सिखला कर चली आ(...)। वो आपस में क्लास करते हैं। आने वाले थे यहाँ। ...कोई कारण से बाबा ने उनको थोड़ा उस समय के लिए बंद कर दिया था कि तुम नहीं आओ। आएँगे तो, हैं ये राजस्थानी मुसलमानों के बरखिलाफ ना। तो वो लोग नहीं तो समझेंगे, पूछेंगे– हमारे पास तो रजिस्टर रखा हुआ है। वो आ करके लिखेंगे पहले–2 और अगर यहाँ पूछते हैं कभी–2, मालूम तो पड़ जाता है ना, तो बोले– इनके पास मुसलमान क्यों आते हैं! ये तो कोई गुप्त वेश में कोई ये लोगों को इनके साथ कनेक्शन तो नहीं है; क्योंकि पहले से ही ये सब लोग मूँझते हैं– ये कौन–सा धर्म है, ये हैं कौन आखरीन में? समझ में नहीं किसको आता है। बाबा सिर्फ थोड़ी वाणी चलाई थी। तो भी भाग करके आया...। दो/तीन सुपरिंटेंडेंट आईं पूछने के लिए कि आप चीन के तरफ के हो, कम्युनिस्ट (साम्यवादी) हो क्या? और हमारे पास तो बड़ी कड़ी आई है कि ये कौन हैं? नहीं तो आजकल तो है ना, बिगर पूछे डालो हाल फिलहाल तो (किसी ने कहा– 5 वर्ष से कम) छोटे बच्चों को। अभी तो तुम देखो बच्चे हो, बैठे हो ना। ये तुम्हारा जन्म ही है गुप्त। किसको मालूम नहीं है। कि कृष्ण का मुख डालने से किसको मालूम नहीं। तो ये बच्चे जानते हो ना कि हम आत्माएँ शिवबाबा के सामने बैठे हैं। तो सब हम आत्माएँ, यहाँ कोई भी आकर कहते हैं ना– पारसी हो, मुसलमान हो, हिन्दू हो, आर्यसमाजी हो, फलाना हो, कोई भी हो, वो अपन को (...)। तुमको समझाना भी ऐसे पड़ना है दूसरों को। तो यहाँ कोई धर्म वगैरह कोई बात ही नहीं। यहाँ बाबा कहते हैं, देखो तुम भूल जाते हो उस समय में उनको समझाने के लिए कि बाबा, जो सबका है, हम सभी ब्रदर्स हैं। हम ब्रदर्स का जो बाबा है, वो कहते हैं। वो भगवान, उनको हम मानते हैं। निराकार है। जो कहते हैं– देह के सभी धर्म छोड़ो। मैं ये रानी हूँ, फलानी हूँ, आर्यसमाजी हूँ, राधा स्वामी हूँ, फलानी हूँ, ये सब छोड़ो। मैं आत्मा हूँ। ये सभी बातें देह के ऊपर पड़ते हैं। अपन को आत्मा समझ करके, ये अन्तिम जन्म तुम्हारा, जबकि बाप आ करके तुम बच्चों को ये पुराना शरीर छुड़ाय करके, पवित्र तो ज़रूर बनना है ना बच्ची। तुमने बहुत पाप किए हुए हैं। उसमें भी नम्बरवन पाप यही है कि एक/दो के ऊपर काम–कटारी चलाते आए हो। दूसरे तरफ पे भगवान को गाली देते आए हो। पतित भी बनते हो, फिर गाली भी देते आए हो भगवान को, ये रावण की मत पर; क्योंकि बच्ची, वो रावण मत, ये राम मत। तो ये बाप ठहरा ना। तो बच्ची, ये तुम बैठो हो, तुमको बड़ी यहाँ उमंग (...), सम्मुख बैठे हो ना अभी। तुमको वहाँ रहते हो ना जब अपने घरों में और सेन्टर्स में, इतना तुमको वो नशा नहीं चढ़ेगा। यहाँ तो सम्मुख बैठे हो ना। ..... हम आत्माएँ जिस बाप को पुकारती थीं– तुम मात–पिता, हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा ते

सुख घनेरे और हम कहते थे– बाबा, जभी आप आएँगे तब हम बलि चढ़ेंगे। आपका बनेंगे, आपके सिवाय मेरा कोई भी नहीं होगा। देखो, ये बाप आ करके बताते हैं ना, तुम ऐसे नहीं कहते थे! तो ये तो बाप ही आ करके डोरापा देंगे ना बच्चों का। तो फिर डोरापा देते हुए कहते हैं कि बच्चे, कोई तुम्हारा दोष नहीं है। ये ड्रामा में नूँध है, सो आ करके तुम बच्चों को समझाते हैं। समझा करके फिर तुम बच्चों को कहता हूँ कि तुम पुकारते हो ना– पतित–पावन, आओ। तो पतितों को पावन करने वाला तो बाप ही ठहरा ना। तो मैं आता हूँ ना। युक्ति तो बताऊँगा ना कि अभी पतित इस जन्म में नहीं बनो। कि ये तुम्हारा अन्तिम जन्म है और तुम बोलती हो कि हमको पावन दुनिया में ले चलो। तो हाँ, बाबा कहते हैं कि चलो, ये जन्म भी पावन रहो और तुम जो पतित (...), जन्म–जन्मांतर का बोझा है, मीठे–2 बच्चों। देखो, बहुत प्यार से समझाते हैं। मीठे–2 बच्चों, मैं कल्प पहले भी तुमको ऐसे ही कहा था कि मामेकम् यानी मन्मनाभव, मामेकम् याद करो तो तुम्हारा जो ये खाद है, पड़ी हुई है, ये चाँदी, तांबा और लोहा। वो सोने में भी ऐसे ही पड़ती है। तो ये भी तो वण्डर है ना कि बरोबर आत्मा पवित्र, सो आत्मा अपवित्र। क्या पड़ा इनमें? भई, गोल्डन एज, सिल्वर एज, कॉपर एज, अभी आइरन एज है। अभी आइरन एज से हम गोल्डन एज में कैसे जावें? तो चाहिए योगाग्नि, याद की यात्रा। फिर इनको 'याद की यात्रा' अच्छा अक्षर है। 'यात्रा' अक्षर अच्छा है; क्योंकि बाबा को याद करते–3 तुम अपने घर जाएँगे बाबा के पास। तो देखो, बाप समझाते हैं कि तुम बच्चों ने आधाकल्प भक्ति की है। किसके लिए भक्ति की है? भगवान के मिलने के लिए। अभी मैं आया हुआ हूँ, तुमको सहज (...); क्योंकि जानता हूँ तुमने बहुत मेहनत की है। जन्म–जन्मांतर मेहनत की है। यज्ञ,तप,दान– शुरू से ले करके। पहले अव्यभिचारी भक्ति, शिव की पूजा करते थे। पीछे तुम देवी–देवताओं की पूजा की है। पीछे अभी तो देखो, मच्छों की भी पूजा करते हो। मच्छों को भी जा करके, राम–4 करके आटे में गोली बना करके मच्छों की भी पूजा कर, उनको भी बैठ करके खिलाते हो। क्या वो बैठेंगे, वो मच्छी खाएँगे तो उनमें राम–2 का वो आ जाएगा असर या क्या होगा यानी बेसमझी अनेक प्रकार की बच्चे। तो बोलते हैं– तुमने बहुत मेहनत की है। प्यार से कहते हैं ना– मीठे बच्चे, एक तो तुम विषय–वैतरणी नदी में गोता खाया है। खाते हुए तुम देवताओं के लिए कहते आते हो कि वो निर्विकारी हैं। अभी तुमको ये पता ही नहीं पड़ा है कि हम ही पूज्य थे, हम ही पुजारी बने हैं। हम ही स्वर्ग के मालिक थे, हम ही नर्क के मालिक। ये कोई को भी पता नहीं है। गाते हैं जब कि आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी, तो भगवान के लिए कह देते।

(अधूरी मुरली)